

## ମୁକୁତରାମ କ୍ଷେତ୍ରି : 'ଚନ୍ଦ୍ରମଙ୍ଗଳ'

୧

- ମୁକୁତରାମ ଆମେ ବନ୍ଦିତ ମୁକୁତରାମର ଆମୀର ଶୁଣିଥିଲୁ ଅପରେ ଓ ରୋଧେ କବିତା ଆମୁଖରୀତିଆମ ଆଛେ ତା ଏଥେ ଅତିରିକ୍ତ ଅଶ୍ୱରନୀ ଗାନ୍ଧା ଥାଏ ।
  - କବିତା ଲିଖାଗତ → ଉତ୍ତରାମ ମିଶ୍ର କବିତା ମାତାନାନୀ, ମିଶ୍ର କବି ଜ୍ଞାନତିର ସିରକୁ ପ୍ରାପନ  
ନିବାସ → କବିତାମୁଖ ବିରେ ରହିଲା ତାମିର ପାଇଁ ମୁକୁତରାମର କୁମିକାର୍ଯ୍ୟ ଅବଲମ୍ବନ କର  
ଲିଖା - ଶାୟମିଶ୍ର
- ଅନୁକରଣକାରୀ ନାମ ଛିଲା 'ଗୋପନୀନାନୀ' । ପରି ବାଜାନିକ ମାତାନାନୀ  
ମହିଳା ଦ୍ୱାରା ଲିଖା ଥିଲା । 'ମୁଖମିଶ୍ର' ରାମା ମାତ୍ରମୁହଁ ଜାରିଥିଲା । ବାମନ କାଳେ  
ମୁଖମିଶ୍ର ରହିଲା ।
- ଅଭିରମୀର ମାତ୍ର ଗାନ୍ଧାରୀ କହିଲା 'ମୁକୁତରାମ ଗାନ୍ଧାରୀ', କହିଲାଲେଇ ରହାନାମ (କାଳକାଳ), ମିଶ୍ରମୁଖ (ଅନୁକରଣ କାମାଦର ନାମୀରେ ମାତ୍ର) ନିରାମିତ ଛିଲୁ ଅଧିନ ନିରାମଦ ଅଧିନ ଉତ୍ତରିତୀକୁଳର ନିରା  
ନାମା କହିଲେନ ଏ 'ମୁଖତେ ଆମେ' ଉତ୍ତରିତ ଥିଲେ ଏକ ମୁଖମାଡ଼େ ଆମୁଖ ନିଲେନ । ଅଥବା କାଳେ  
ଦେବୀ ଚନ୍ଦ୍ର କବିତା ମାଧ୍ୟରେ ରହିଲେ ଏଥାର ଆମୁଖରେ ଏଥାର କବିତା ରହିଲେନ । ଏବେ ମିଶ୍ର  
ମହିଳା - ସିରକୁ କାବ୍ୟ ଲିଖିବାରେ ନିର୍ମାଣ କିଲାନାମ । ଅବଲମ୍ବନ କବି ନିର୍ମାଣକାରୀ ନାମୀ ପାଇଁ ଶୁଣିଥିଲୁ  
ମୁଖମିଶ୍ର ରହୁନାଥର ସୁଶମୀଖର ନିଯୁକ୍ତ କହିଲେନ । ରହୁନାଥ (ରହୁନାଥ କହିଲେନ ଏବଂ)  
କହିଲେନ କହିଲେନ ପର୍ଯ୍ୟାନରେ ରହୁନାଥ (ରହୁନାଥର ନିର୍ମାଣକାରୀ) ।

### ୫ କବିତା ଲୋକିକ ଉତ୍ତରିତ - ମିଶ୍ର

- ମୁକୁତରାମର କହିଲେନ ରାମା ମାନମିଶ୍ରରେ ଡେଲେଇ

- ବନ୍ଦା, ମୁଖମିଶ୍ର, ଦନ୍ତ-ଶିର-ମାତ୍ର, ମାତ୍ରର ତୁଳ୍ୟାଗ, ଦନ୍ତମର୍ଦ୍ଵାରା, ଦନ୍ତମର୍ଦ୍ଵାରା  
ମର୍ଦ୍ଵାରର ସିରାର ଓ କେଳାମେ ଭୋଗମନ - ଦନ୍ତମର୍ଦ୍ଵାରି ଶୋଧ ।

- ମାର୍ତ୍ତିର କାହାରେ : - ମାର୍ତ୍ତି ପୂଜା କାହାରେ କାହା ଇନ୍ଦ୍ରମୁଖ ନୀଳାମ୍ବର ଓ ତାମାତ୍ରୀ ଚାମାକ  
ମର୍ଦ୍ଵାରର କବି ମର୍ଦ୍ଵାର ଶୁଣେ କାଳକେତୁ ଓ ମର୍ଦ୍ଵାରର ଥରେ ମୁଖରାର କାଳ କାଳ କିମ୍ବା  
ମର୍ଦ୍ଵାର ନୀଳାମ୍ବର ମାର୍ତ୍ତି କାଳକେତୁ । ଲିଖାଗତ → କାଳକେତୁ  
(ନୀଳାମ୍ବର ଅତିରିକ୍ତ)  
ଲିଖା → ମର୍ଦ୍ଵାର  
ମାର୍ତ୍ତି → ମିଶ୍ର
- ମର୍ଦ୍ଵାର ଚାମାକାରୀ - ମାର୍ତ୍ତି ମୁଖରା । ଲିଖା → ମର୍ଦ୍ଵାରକେତୁ । ଜାତ → ଶୀର୍ଘ୍ର
- କାଳକେତୁ ଓ ମୁଖରାର ପୁଅ → ପୁଅକେତୁ ।

କାଳକେତୁର ସମ୍ବନ୍ଧରେ ଆମ୍ବିତ୍ତି, ମୁଖରାର ମାତ୍ର ସିରାର, ଦନ୍ତ-  
ମର୍ଦ୍ଵାର ଆଲିଯୋଗ, ଦନ୍ତମର୍ଦ୍ଵାର କାଳକେତୁର ଗୋବିଳାବନର ଓ  
ଆବଧିନ, ଦନ୍ତମର୍ଦ୍ଵାର ଆଲିଯୋଗ ଏବଂ କାଳକେତୁର କୁଳା, ଦନ୍ତମର୍ଦ୍ଵାର କାଳକେତୁର  
କାଳକେତୁର, କାଳକେତୁର ନମର ପାଇଁ, ବୁଲାନମୁଖର ହେଉ ଦିନେ ଅମୁଷେରଭାଗମନ,  
ବିଜିତ ଭାଗମନର ବାମମନନ, ହେଉ ଦିନେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଆହୁତି କାଳକେତୁର କାଳକେତୁରକୃତି  
ଭାଶାର ପ୍ରାମାଣ, ଆମାନର ଆତିଥୋରିଥରର କାହା ହେଉ ଦାତର କାଳକେତୁରକୃତି  
ଭାଷକୁ, କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର ଅଭିଭାବିତ  
କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର କାଳକେତୁର  
କାଳକେତୁର ମୁଖରାର ଶାଳର ଅକମନ, ପୁଅ ପୁଅକେତୁର ଶର୍ଷର ବୀଜୁପାର ଅଭିଭାବିତ  
କାଳକେତୁର ନୀଳାମ୍ବର ଓ ଚାମାକାରୀର ମର୍ଦ୍ଵାର ମୁଖମିଶ୍ରର ଶର୍ଷର

वानिक-महात्मा :-

उत्तमप्रतिष्ठित वर्तमान दरबीनूजा अचारके लिए ईन्होंने गजटाराव कर्जकी रणभाला शास्त्रधर्म दर्शन के लिए उत्तम लक्षणात्मिक वर्तमान दरबीनूजा गजट धूलना नामे लिखा है। लक्षण नामे आरे एक दुर्गी आकार मालिक विनाशि शूल्कार विवाह इल। विवाह एवं प्रूक्षणात्मिक धारा आनंद विनाशि गोप्ता दरबीनूजा लिखता है। अद्वितीय लक्षणा-धूलनार भविष्यति दर्शक दुर्लभा दामी लक्षणा के दुर्लभना लिले शामीरयार लिए लक्षणा लीलावती जागानीहै आत्मा। विनाशिक शुद्धारु लाल कृष्ण दरबीनूजा के दृश्य विवाह रथे लिले, धूलना चट्टिकाल्पना वर्तमान लिले। विनाशि भवेत्या अण्णावर्तमान लक्षणा के दृश्यार धूलना द्वारा प्रदाति अल्पम वरहाव लिले। धूलनार गोप्तमलाला, विनाशि धूलनार चोप्तुणा, यह लिले लक्षणे अर्थ विवाह लालाशाल लिले। विनाशि वाश्वापाति लालीदर्श करता करिति' कहता है। विनाशि वालवाहन वराजार भवील दृश्यार दृश्य ओ वालाके अः द्वारा देशार्थ वृद्ध शहर विनाशिक लालावर्तमान।

- अवैर योगार्थ मारी द्वारा शालकाश्च सम्मति १ थां इति पायः।

□ आपेक्षित धर्मक्रम इष्टवीकृत वर्णिकर नाम शुभाग्नि शील ओ अवैर लक्ष्मी वस्त्राती,

□ शालकाश्च देवीप्राप्त अनुकूलिताते उज्ज्वल छिल १६ वर्ति २ धनः।

□ शिखलय आण्डीर गल शुभाग्नि शील नाम गिरूर राय आवाना, अधिकात लांचगडा

□ दंडु द्वारा श्रिदृग्देवता ओ अथदण्डे-स्नाति। दंडुर लेख मिवादते।

□ लक्ष्मीर नामी दुर्लक्षा,

□ लक्ष्मी २१ रुद्रार रथां विवाह शयः।

□ दुल्लनाय २२ रुद्रार " " "

□ दिनपाति अदागरेर पद्मी छिल दण्डः।

□ दुल्लनार शासनो दागल → मर्मी

□ दुल्लनार जातिमोर्ति → मिला

□ दुरुक्लर लिता शश्यमिश्र दूसिंगाळ मिश्र देवाचि धर्वत करेत,

□ गरि विलेके जेतियाप दूरकीतकत रवलाचेत।

□ गर्ग्यमूर्गान्पि करि मानिकवाम अयोमङ्गलव रागिकै द्वूरुक्लवाम रवलाचेत।

✓ कविर अन्मा - १९६० द्वी.,

□ तिनि रव्युनाथ वायर लृष्टलाभकर्ताय एवाव रवना भृत्वा।

④ પારિયોગમની રચના કાર્યા ગુરુ - વિજય અભિનાત લાંડા। રચના - અભિનાત શ્રી.

- मूरुक दग्धाते विष्णु ओ चीर बनवा कारति.
  - सतीर दशाता औ मिवड विर्या दग्धाते हें लहर - वीरण्ड
  - लावतीर विर्या, पांडु उपाता, शुभ्रातर अशृण्याप विरक्ता  
रतिएं तगड़ विर्याति इति ।
  - ए मालाख नीलाखर → बालक्कु → पिण्ड इमरिष्टु  
मालाखे छाया → दूलता → पिण्ड मन्द्रयक्कु  
" मालाखर → ओड़तु → पिण्ड इन्द्रिय → डोकानि तगड़ेर मालाख  
" उधमाना → धूलता → माण शुल्का  


- नीलाञ्छरके अधियाया दत्त महादेव ।
  - कालकेषु - शूलकार विवाहेर योग → रक्षामाई प्रसिद्ध ।
  - शूलकार - गरुडमासा दर्शाघमामे शूल ।
  - श्री कालकेषुके रक्षाघमामे दर्शन देता ।
  - श्री कालकेषुके ७ चंडा दिन देता ।
  - एवीजाणु जन्मूर्तीय शूलके छिल - ७ दिनों तक ।
  - बुलात मनुष्याङ्क श्री कलिङ्ग गांग करते शूलकार नगारे बाहर धूमाद्वारा देता ।
  - शूलगार नगारे कालकेषु शूलमन्त्रान उलादेर प्रसिद्ध दिव्य  
काथस्तु " दक्षिण " ब्रह्माम करते देता ।
  - ए शूल गमयन्ते श्रील तिति दिवि ना हैपा ग्रन्थात् ओल्डग्रामिक इष्टात्र ।  
→ औद्योगिक ग्रन्थाद्वारा
  - विद्याति ज्ञानार्थे वाची उक्तातिनगार ।  
उक्तातिनगार वाचार नाम → श्रीमतकम्बवी ! वाचकना → ज्ञानी
  - विद्युत वाचकना भूरीला श्रीअन्तुर अथमा श्री-,  
उक्तातिनगार " अपारती " द्वितीया श्री- ।
  - ललित्यादेव जागता → शीरभूषा  
शूल → वत्सिष्ठ, वत्सिष्ठ, वत्सिष्ठ,  
कोट्टल → शीरभूषा
  - अथा - दशके अभाद करते कृतकापाता
  - दशालये गमतकाले शीर्णीर भाष्याय छाणे दिये कृती  
" " " " माणा धार्य → द्वै अतापाति सका - लोका ।
  - शीरभूषा नाम दशत अद्याख्याति दिये अना श्री कृत द्वय, इच्छुर इमर्ती - त्रूपा
  - आधर्णुग देवार शब्द कालकेषु भात करे → कृतमतीता,
  - शूलकार धेद अद्याये गोलाशाहीय शीर्णप आदे ।

- शुल्करा अब माइ-एव लाई 'शुल्करा' का नाम दिया गया।
- अब तक छापरहत शरार अदियाले द्वारा नहीं।
- 'मध्यन कठित लाई' द्विं चंद्रियाला' → शुल्करा-मध्यन' लाई है।
- राजीवांस का लोग 8 बार 'कमाल कालिती शुल्करा' लाई है।
- शिवार्थि शुल्करा → शुल्करा
- ④ कालिक शुल्करा-शुल्करा अदियाला' के लिए शुल्करा'
- कालरेल शुल्करा द्वारा शुल्करा-मिश्यारका।
- शुल्करा अदियाले का लोग लाई → अदियाल
- रावीन्द्रिंश शुल्करा अदियाला लाई।

- ⑤ □ 'अजाह लालो' अदियाले लिए लिए, अलिंगी-लियाले [कालिक अदियाले लिए, अदियाले लियाले उल्लंघ लाई, शुल्करा आई] द्विं ले लिया उल्लंघ करने लाला लाया।

### अदियाले लिए

→ लेखक राय?

- अम → [द्वियरुद्धुरु लग्न २१२३ श्री.]
- अम → २१०८ अथवा २११० श्री. अब शर्यरी' लोगों लाला लाया।
- शुल्करा → २१६० श्रीः, बद्धमूल लोगों।
- अभ्यास → लोडो, भागता आवा, शाहज़ा
- अख्यालिये लियेहैन → 'मणपीले लाँगली' ले।
- लिंग → नहकतारायत राय, ठाकुरदा → 'मामिर राय', अदाशिले लिंग → दूलिर राय।
- 'माता' → लोटी।
- उलासी → राय, लोलिक लारी → 'शुल्करा लियाय'
- अवतारक वर्षमान लेलार अकुलि 'शुल्करा' परगतार सम्भाल द्वियरुद्धुरु कीरी चिलन।
- अवतारक तिन अप्यज → शुल्करा; अतुर्न, द्वाराम
- नहकतारायतें माझे वर्षमान लीतिलेले - मा विनकुमारी विवाह इल नहकतारायत मर्वद्यारु इन। उद्यत लेखक लाँगलाया परगतार गजीन्दुरे लिकाली नहयालाडा आजे शालुलालाय लाल थान ओ सद्युल्ल शाधेन।
- कवि 'शुल्करा' परगतार लोकदूरे लिकाली 'मावदायामेर लेशबद्धुरि' नहयाल आचार्ये लेलारे विवाह करेत।
- लेखकले गायेक ड. 'मानमोहन रामायामी' मात्र ऊंच श्रीर नाम शर्या।
- लेखकले शुल्करा नाम → लगी लित, बामतू, लेगात।
- कवि द्वारकनशुल्करा वर्षमान शुल्करा लाल यारी लेया शिखा करेत।
- लेखकले ऊंच अप्यजदूरे 'परामर्श' लित्यमप्याति उकाले लेल वर्षमान 'मावदायामेर लाल' लेले शुल्करा वर्षमान 'लिलि लालालक' इन।

- लार्गिंग्रेव कथाय बृद्धनाथ नामक शूर इत्याकृत माझे तिती काळे आलिल्या थाते.
- शूरानाऱ्ह ब्राह्मण शिवलेपुळे याअसू छाशवं करवेन।
- ऐश्वर्य ओ बृद्धनाथ चाळूळाटार्फे मठे भवासी भाले वारा कडूल थाकेन।
- अरतोद्दृ 'शूनि ठोंगामाई' नाम निये तीव्रिमित, कव्रूण आकृत!
- धानाकूल घावेच आलिदाति आई-त्यर अबूर्वावे शूनवय अनुमात्र खिले अलकात - मरकारेव देण्यात रामराव शूद्धरेज्जर वाडिते वारा कडूल थाकेत!
- गरे अवाम डार्लिंग घरासी शार्टमानेव देण्यात शूनरामात रेष्ट्रिवील शावासात इत.
- शूनरामापृत ठोंगी बकू अशावाल बृहत्ताळूर मठां लेवताळूर परिपाच किले.
- 'माशावाल इख्ताल' ऐश्वर्यार ऋषिष्ठालेय शून्य इत ओ आरे मासिक ४० टोका इत मांदोकरि निपूण करवेन। ठोंक 'शूनाळू' ठोंगारि ० शूनाळोडू' एवा शूद्धाळू फेन।
- ऐश्वर्याळूर काग्य :
  - १> अण्णारीरेव कथा - १९३७ श्री.
  - २> छत्रीनाळू
  - ३> रमभद्रुरी
  - ४> रागाळूक
  - ५> गण्णाळूक
  - ६> रवितारली
  - ७> पश्चान्नवाद
  - ८> अन्नामर्गंल
- 'अन्नामर्गंल' अरे रातोकाळ १९३२ श्री. कालीरु तिती घट्टु - १९३२
- अन्नामर्गंल वा अन्नामाशाळ्य,
- ) कालिकामर्गंल वा विद्यामूर्ती शार्य,
- ) अन्नपूर्णमर्गंल वा मानमित्तु,
- करितांर काळेर नाम राखेन 'नूतनमर्गंल'.
- भर्गमध्यम अन्नामर्गंलीर सूजा करवेन - श्वर्मचिक्क.
- ऐश्वर्य 'वायपूताळ्य' ठोंगी पान - १९४६ श्री.
- 'विद्यामूर्ती' पालाव आर्द्धी राखिणी - श्रीर्हीर.
- ऐश्वर्याळूर बर्विक्कर रागात्मी - शूलाळोडू'
- ऐश्वर्य परित्ति छिलेन 'शूनि ठोंगामाई' नामे,
- अन्नामर्गंल काळे ऐश्वर्य 'शूनि ठोंगामाई' लेतिआ रवशार करवत्ति अक्षवारण।
- काळे अस्थम विद्यापाला जाअं इय - शूलेवार,
- श्वर्मदेव 'शूनि रागात्मी' विर्मात ग्रहू रेष्ट्रिलेन - शूरीत,
- 'शूनामर्गंल' काळेर अस्थम गायेन - नीलरुति, श्रमाळार,
- 'शूनामर्गंल' लिता → शूनमित्तु
- विद्यार लिता → श्रीर्हीर्तु
- शास्त्रार्थ<sup>श्रद्धा</sup> शूनकर यागानक नाम
- श्रीर्हीर यागानी नाम अत्याशत रुत्र,
- शशार लाजिभा ठुरि करि लिया, असौ लत बृश त्वार' → श्रीर्हीर
- अन्नपूर्णित आशर निये 'मानमित्तरेव तेव' मानमुरुर गाँवात → तेवात मत्तुमाळार

- एवं नलिके पूजा → श्रीलालाज.
- एवं नलिके पूज्योदाती → पद्ममुखी, दृष्टिराती → चक्रमुखी,
- चक्रमुखीर दासी → दासी, पद्ममुखीर दासी → मासी
- मानसिंह अठागांगितोक घिरे रेतेज आशांतिवेक्ष उपराह गाठात.
- एवं नलिके लिङ्गियालार मञ्ची → दामु - रामु
- आशांतीर → लालाज
- ऊमा'र नामकरन कृति → मनका
- अवलोक्ते अनुदामचंल अथम मूर्धित आकारे अकाशित इय → ए-६ भी.
- "मानसिंह" "दृष्टिराती" "मनिका" भास्त्रकरन रेते रात → गंधारियार छोडाय.
- 'अवलोक्ते शक्ति कृति अक्षमचंल' — नलीनिनाथ चतुर्पाणिकाय
- शालखेडेर शुक्रवर्ते अथम अनुदामचंलेर अद्यावियोध उक्त इय.